



आरत का गज़त

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राप्तिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

CE 11/07/85

सं. 365]

No. 365]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 29, 1985/श्रावण 7, 1907

NEW DELHI, MONDAY, JULY 29, 1985/SRAVANA 7, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाली है जिससे कि यह बलग संकलन के क्षय में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक वार्षिक विभाग)
(बैंकिंग प्रभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 29 जुलाई 1985

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th July, 1985

दा. आ. 557(अ) —कर्त्रीय मरकार बैंकिंग विभिन्न
यमन अधिनियम, 1949 (1949 को 10) की धारा 45
की उपवारा (7) के अनुसरण से, मिरज स्टेट बैंक
लिमिटेड, मिरज के गृनियन बैंक ऑफ इंडिया के साथ समामेलन
की स्थीम के सबथ में, जो उच्च उपवारा के उपबंधों के
अवीन कर्त्रीय मरकार द्वारा मजूर की गई है, 30 जुलाई,
1985 को विहित तारीख के दूर में विनिर्दिष्ट करती है।

S.O. 557(E) —In pursuance of sub-section (7) of
section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10
of 1949), the Central Government hereby specifies the
30th July, 1985 as the prescribed date in relation to
the scheme for the amalgamation of the Miraj State
Bank Limited Miraj, with Union Bank of India which
has been sanctioned by the Central Government un-
der the provisions of the said sub-section.

[म. का. टी.एम/1/85-बीओ-III]

[No. F. TS 1/85-B.O. III]

का. आ. 558(अ).—केन्द्रीय सरकार ने बैंकों की विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आवेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन, मिरज स्टेट बैंक लिमिटेड मिरज के संबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन अधिस्थगन आदेश दिया है।

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त अविनियम की धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, यूनियन बैंक और इंडिया के साथ मिरज स्टेट बैंक लिमिटेड के समामेनन की स्कीम नैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6)¹ के उपबंधों के अनुमार उक्त स्कीम का प्राप्त संबंधित बैंकों को भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की वावत प्राप्त सुन्नावों और आक्षणों पर विचार करने के पश्चात् वह स्कीम उपार्तित की है और उसे मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार को भजा है।

अब अब केन्द्रीय सरकार उक्त अविनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए इसमें आगे बर्णित निबंधनों और शर्तों के अधीन रहने हुए, इस स्कीम को मंजूरी दे दी है।

(1) मिरज स्टेट बैंक लिमिटेड, मिरज अन्तरक बैंक होगा और यूनियन बैंक और इंडिया अन्तरिती बैंक होगा।

(2) ऐसी तारीख भे जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त अविनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनियोजित करें, (जिसे इसमें इसके पश्चात् विहित तारीख कहा गया है) अन्तरक बैंक के सभी अधिकार, शक्तियां, माल, दावे, हित, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, आस्तियां और जंगम और स्थावर संगति, जिसके अन्तर्गत भू-धूनि के सभी आपतनों या पट्टों या कागरों द्वारा आरक्षित और उसमें अन्तरित भाटकों और अन्य धनराशियों और प्रमंविदाओं के अधीन परिमर, जिसके अधीन वे धारित हैं, सभी कार्यपालिका फर्मिचर, विदेशित उपस्कर, संयंत्र, यंत्र और साधित्र, वही कागजपत्र लेखन-सामग्री, स्टाक, अन्य स्टाक और सामान, सभी स्टार्क विनिधान, शेयर और प्रतिशेयां, हाथ में और अमिवहन में प्राप्त सभी हुण्डिया सभी हाथ की और खेत्र की रोकड़ या बैंकों पास निक्षेप लेखा (जिसके अन्तर्गत सांग पर या संक्षिप्त सूचना पर धन भी है), बुलियन, सभी बही ऋण, बंधक ऋण और प्रतिभूतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभूति अन्तरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हों संपत्ति अधिकार और सभी प्रत्याभूतियों के अस्ति संबंधी फायदे, इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अन्तरित बैंक को अन्तरिती हो जाएंगे और उसकी सम्पत्ति और आस्तियां बन जाएंगे और विहित तारीख से ही अन्तरक बैंक के सभी दायित्व, कार्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार तक और रीति-

में अन्तरिती बैंक के दायित्व, कार्तव्य और बाधवानां होंगे और बन जायेंगे।

पूर्वगामी उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदायें, विनेश, बंधपत्र, कारबार, मुद्रारननामें, विधिक प्रतिनियित्व की मंजूरियां और किसी भी प्रकृति की अन्य लिखतें जो विहित तारीख के ठीक पहले आस्तिवशील पा प्रभावशील हों, अन्तरिती बैंक के विनाश या उसके पक्ष में इसमें आगे उपबंधित विस्तार तक और गीति में प्रभावशील होंगी और जैसे ही शार्थविन की जा सकेगी मात्रा अन्तरक बैंक के स्थान पर अन्तरिती बैंक उसमें पक्षकार रहा हो, मात्रा वे अन्तरिती बैंक के पक्ष में जारी की गई हों।

यदि विहित तारीख को अन्तरक बैंक द्वारा या उसके विनाश कोई बाद, अपील या किसी भी प्रकृति की कोई अन्य विधिक कार्यवाही संविन है तो उसका उपशमन नहीं होगा, वह बन्द नहीं होगी या उस पर जिसी भी रूप से प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए, अन्तरिती बैंक के द्वारा या उसके विनाश जारी रखी जा सकेगी और प्रवर्तित की जा सकेगी।

यदि भारत में बाहर के किसी देश की विधि के अनुमार इस स्कीम के उपबंध उस देश में स्थित जिसी ऐसी आस्तियां दायित्व को जो अन्तरक बैंक के उपक्रम के भाग है, अन्तरिती बैंक को अन्तरिती या उसमें नहित बनने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते तो ऐसी आस्तियां दायित्व के संबंध में अन्तरक बैंक का कार्यपालक अधिकारी में न्यून हो जाएगा और वह मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसी सभी शक्तियों या प्रयोग कर सकेगा तथा ऐसी सभी कार्य और बातें कार सकेगा, जो प्रभावी स्पष्ट से इसके कार्यपालक के परिमापन के प्रयोजन के लिए अन्तरक बैंक द्वारा प्रयुक्त की जा सकती है। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ऐसा अन्तरण और निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यवाहिया करेगा जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हो और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी, या तो स्वयं या अपने द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा अन्तरक बैंक की आस्तियां बनूत कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वहन करेगा और उसके शुद्ध अगामों का अन्तरिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

(3) अन्तरक बैंक को बहिया बन्द की जाएंगी और उसकी तुलना की जाएगी और तुलन-पत्र प्रथमतः 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति पर और तत्पश्चात्, विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को कारबार की समाप्ति पर संयार किया जाएगा तथा तुलन-पत्र चार्टर्ड लेखाकारी या चार्टर्ड लेखाकारों की फिसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनियोजित की गई हो, संपर्कित और प्रमाणित कराये जायेंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गई अन्तरक बैंक के तुलनात्मक की प्रत्येक प्रति अन्तरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् यथासंभव यीमी कानी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक से तुलनात्मक या नाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत करने या उसकी प्रतिया कंपनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने की या तुलनात्मक और लेखा पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपबंधों के अनुपालन दर्शन के लिए वार्षिक भारारण अधिकेशन बुलाने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और तत्पश्चात् अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उस अधिनियम की धारा 285 की अपेक्षानुसार अधिकेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

(4) I. अन्तरिती बैंक अन्तरक बैंक के परामर्श से निम्नलिखित उपबंधों के अनुसार अन्तरक बैंक की संपत्तियों और आस्तियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की समग्रण करेगा, अर्थात्—

(क) सरकारी प्रतिभूतियों में भिन्न विनिधानों का मूल्यांकन विहित तारीख की ठीक पूर्ववर्ती तारीख को विद्यमान बाजार दरों पर किया जायगा।

(ख) (i) सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गई अधिमूलन में अधिकाधिक सिद्धांतों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जाएगा।

(ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों जैसे डाकघर-प्रमाणपत्र, ट्रेजरी बचत निक्षेप प्रमाण पत्र और केन्द्रीय सरकार की लघु बचत योजना के अधीन जारी की गई कोई अन्य प्रतिभूतियों या प्रमाणपत्रों का मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य के आधार पर या उक्त तारीख को नकद प्राप्त मूल्य के आधार पर, इन दोनों में से जो भी उचितर हो, किया जाएगा।

(iii) जहां किसी सरकारी प्रतिभूति जैसे जमीदारी उनमूलन बंधपत्र या अन्य समान प्रतिभूति जिसकी बाबत मूल किश्तों में देय है, वा बाजार मूल्य अभिनिष्ठित नहीं किया जा सकता है या किसी कारणवश यह माना जाता है कि वह उसका उचित मूल्य प्रक्षेपित नहीं करता है या वह अन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का मूल्यांकन उनी रकम पर किया जाएगा जो मंदस्त किए जाने वाले बकाया मूल और उसकी ब्याज की किस्तों को उस कालावधि को जिसके द्वारा ऐसी किश्तें संदेश हैं, सरकार द्वारा जारी की गयी किसी प्रतिभूति के मूल्य को जिससे प्रतिभूति का मंबंध है और जिसकी वैसी ही या लगभग वैसी ही परिपत्रता

है तथा अन्य सुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए युक्तियुक्त समझा जाता है।

(ग) जहां किसी प्रतिभूति, शेयर, डिवेंचर, बंधपत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके प्रसामान्य बातों से प्रभावित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं माना जाता है, वहां विनिधान का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त बालावधि के द्वारा उसके औसत बाजार मूल्य के आधार पर किया जायेगा।

(घ) जहां किसी प्रतिभूति, शेयर, डिवेंचर, बंधपत्र या अन्य विनिधान का बाजार मूल्य अभिनिष्ठित नहीं किया जा सकता है, वहां जारी करने वाले गमत्यान की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के द्वारा उसके द्वारा संदत्त नाभों और अन्य मुरमगत बातों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई है, हिसाब में लिया जाएगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जाएगा।

(ङ) दावों की तुष्टि के लिए अंजित परिमार्गों और अन्य सभी जगम संपत्तियों और किन्हीं आस्तियों का मूल्यांकन उनके बाजार मूल्य पर किया जायेगा।

(च) फर्नीचर और फिक्सचर, स्टाक की लेखन भास्त्री और अन्य आस्तियों यदि कोई हों, का मूल्यांकन प्रति वही अधिकाधित मूल्य के आधार पर या वसूली योग्य मूल्य के आधार पर, जो भी युक्तियुक्त मूल्य माना जाएगा, किया जाएगा।

(छ) अग्रिमों, जिसके अन्तर्गत क्रय की गई और मितिकाटे पर भुगतान की गई हुण्डियों भी हैं, वही अद्वारा और विधिक आस्तियों की संवीक्षा अन्तरिती बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभूतियों जिसके अन्तर्गत उसके आवक के स्वप्न में धारित प्रत्याभूतियों भी हैं, अन्तरिती बैंक द्वारा परेशित और सत्यापित की जाएगी। तपत्पश्चात्, अग्रिम जिसके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं, वो श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाएंगे, अर्थात् “वे अग्रिम जिन्हें अच्छा और आमानी से वसूली योग्य माना गया है” और “वे अग्रिम, जिन्हें आमानी से वसूली योग्य नहीं माना गया है और/या जिसकी वसूली डूबते या शंकास्पद है।”

II इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए दायित्वों के अन्तर्गत ऐसे सभी भमाश्रित दायित्व भी हैं, जिसके लिए अन्तरिती बैंक से विहित तारीख को या उसके पश्चात् अपने स्वयं के खोनों से उचित स्वप्न में पूर्ति करने की आशा या अपेक्षा की जा सकेगी।

III जहां किसी आस्ति का मूल्यांकन विहित तारीख को अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहां वह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन में, भागतः या पूर्णतः किसी पश्चात्-वर्ती तारीख की वसूली योग्य आस्ति के स्वप्न में माना जायेगा।

किसी आस्ति के मूल्यांकन और/या किसी अप्रिम के वर्गीकरण और/या किसी दायित्व के अवधारण की बाबत अन्तर्गती बैंक और अन्तरक बैंक के बीच कोई अपहमति है, तो वह सामान्य भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा जिसकी राय अनिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अन्तर्गती बैंक हारा मदों या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कोर के प्रयोजन के लिए अनन्तिम रूप से अपनाया जाएगा।

ऐसा करना आवश्यक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना आवश्यक होगा जो बहुआस्ति की ऐसी किसी मद के मूल्यांकन या दायित्व की ऐसा किसी मद के अवधारण के संबंध में समुचित समझे, और ऐसी राय अभिप्राप्त करने का व्यय अन्तरक बैंक की आस्तियों में से पूर्ण रूप से देय होगा।

पूर्वामी उपबंधों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अवधारण होनों बैंकों और उसके सदस्यों आर लेनदारों पर आवश्यक होगा।

(5) अन्तरक बैंक की सर्वति और आस्तियों के अन्तर्गती बैंक को अन्तरण होने के प्रतिकल स्वरूप अन्तर्गती बैंक इस और निम्नलिखित खंडों में वर्णित विस्तार तक अन्तरक बैंक के दायित्वों का निवेदन करेगा, अर्थात्—

(क) विहित तारीख तक कर्मचारिवृन्द प्रतिभूति निषेप सहित उस पर प्रोद्भूत व्याज, यदि कोई हो के माथ उस बैंक के पास अन्तरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गई कोई धनराशि और विहित तारीख को सभी अन्य बाह्य दायित्व जिसके अन्तर्गत निषेप नहीं है, सदत किए जाएंगे या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्टीकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीख तक निषेप पर देय व्याज संबंध निषेप का भाग माना जाएगा।

(ख) प्रत्येक बचत बैंक खाने या नालू खाने या किसी अन्य निषेप की बाबत जिसके अन्तर्गत मावधि-निषेप, तकद प्रमाणपत्र, मार्मिक निषेप, माग या संक्षिप्त मूच्चता पर देय निषेप या अन्तरक बैंक के पास कोई अन्य निषेप चाहे वे किसी भी नाम से जाने जाने हो और कोई अन्य खाने जो खंड (क) के अन्तर्गत नहीं आते हैं जिसके अन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देय सीमा तक व्याज भी है, अन्तर्गती बैंक विहित तारीख को संबंधित धारक (कों) से नाम से एक तत्त्वमान और वैसा ही खाना योग्यता जिसमें विहित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) से निर्दिष्ट तथा मूल्यांकित आस्तियों में से प्रत्येक खाने के संबंध में उपलब्ध आनुपातिक शेयर मूल्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में से वे अग्रिम जो आसानी से व्युत्पन्नी योग्य नहीं माने गए हैं

या इबत हैं या जिनकी बम्बी शंकास्पद हैं कोई अन्य आस्तिया या आस्ति के भास जो विहित तारीख का मूल्यांकित नहीं है और अन्य रकम जो ऊपर खंड (क) में वर्णित मदाय या उपबंधों के लिए अपेक्षित हैं, अपवर्त्तित किए जाएंगे और इस प्रकार मूल्यांकित उक्त आस्तियों में अन्तरक बैंक को जारी किए गए तारीख 27 अप्रैल, 1985 के अधिक्षण आदेश के पैरा 2 के खंड (क) (1) के आधार पर किए गए मदायों की सक्रियता रकम जोड़ेगा।

परन्तु 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति को या उसके पश्चात् और विद्युत तारीख के पूर्व किसी निषेप खाने से किए गए किसी सदाय की मगणता इस उप पैरा के अधीन जमा की जाने वाली रकम के मध्य की जाएगी और अनुसार जमा की जाने वाली रकम आनुपातिक शेयर होगी जिसमें से मदाय की रकम कम कर दी जाएगी, परन्तु यह और कि जहां अन्तर्गती बैंक को किसी विशेष खाने से की गई प्रतिशिष्टायों के गहरी होने के बारे में कोई यक्षियत मद्देय है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन में ऊपर खंड (ग) के आधार पर उस लेखे में किए जाने वाले जमा धनराशि को प्रतिशासित कर मकेगा जब तक कि अन्तर्गती बैंक ऐसे खाने में मही अनिशेष अभिनिष्चित नहीं कर लेता है।

स्पष्टीकरण

"आनुपातिक" पद म. जहा तक वह इस पैरा से आता है ऐसी सबधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबार की समाप्ति पर बकाया देय है (विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देय व्याज महित) और जहा तक वह इस स्कीम में अन्यत्र आता है, मेंगे संबंधित रकमों के अनुपात में अभिप्रेत है जो मंदाय या विवरण के सम्पर्क बकाया देय है।

(ग) ऊपर खंड (ख) में निर्दिष्ट जमा धनराशि दिए जाने के पश्चात् अन्तर्गती बैंक संभवतः कम से कम विलम्ब में किन्तु विहित तारीख में तीन मास तक निषेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम अधिनियम, 1961 के अधीन स्थापित निषेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम को (जिसे इसमें इसके पश्चात् निगम कहा गया है) एक सूची देगा। जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेक्षाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्पश्चात् जब भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो अन्तर्गती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसका रकम प्राप्त होती है, मात्र दिन के अन्दर उस खाने में देय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खंड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खानों में जमा करेगा।

परस्तु,—

(क) यदि खड़ (ख) में निर्दिष्ट कोई खाता बन्द कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को सदाय अन्तरिती बैंक द्वारा नकद रूप में किया जाएगा,

(ख) यदि खड़ (ख) में निर्दिष्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका आमानी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देय रकम के लिए उपबंध स्वयं निगम की वाहियों में किया जाएगा और उसका प्रत्यक्ष रूप से लेखा दिया जाएग तथा अन्तरिती बैंक को किसी रकम का सदाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता नहीं चल जाता है और निगम ने अन्तरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति की बाबत सदाय करने का विनिश्चय नहीं कर लिया है,

(ग) विहित तारीख का अन्तरिती बैंक को समादत्त पूँजी को संपुर्ण रकम और आरक्षित को डिवंत और शकास्पद क्रूण के लिए उपबंध के रूप में माना जाएगा और अन्तरक बैंक की अन्य आमितियों में अवक्षण और अन्तरक बैंक के मदम्यों के अधिकार अन्तरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) से उपबंधित हैं।

(6) निम्ननिखिल की बाबत,—

(क) पूर्ववर्ती पैरा के खड़ (ख) में वर्णित प्रत्येक लेखे की बाबत उस खड़ और खड़ (ग) के आधार पर किसी लेखे, यदि कार्ड है, में जमा न किया गया अनिश्चेप आए।

(ख) अन्तरक बैंक में प्रत्येक शेयर की बाबत जिसकी रकम विहित तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी ओर से शेयर पूँजी के सदृश यमादन रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में अन्तरिती बैंक द्वारा की गई मांग के सदृश रकम सदन की गई थी, संगहरण रकम के रूप में माना जाएगा और उसे अन्तरिती बैंक की वहायियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा आरम्भेया के विशुद्ध सदाय निम्ननिखिल रूपत में किया जाएगा, प्रथमत्,—

(1) (क) अन्तरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जा विहित तारीख को अन्तरक बैंक में आस्थित शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकूट था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकूट किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के

अन्दर जो विनिर्दिष्ट की जाए या जाए, ऐसे शेयर या शेयरों और वकाया मांगों, यदि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा असदत्त रह रही अनाहत रकम का सदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तपश्चात् यदि यह आवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित तारीख को, अन्तरक बैंक के माधारण शेयर धारक के रूप में रजिस्ट्रीकूट था (या जो इस प्रकार रजिस्ट्रीकूट किए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीख में जो विनिर्दिष्ट की जाए, तीन मास के अन्दर ऐसे शेयर या शेयरों या वकाया मांगों, यदि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा असदत्त रह रही अनाहत रकम का सदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।

(ख) अन्तरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए व्यतिक्रम की कालावधि के लिए छह प्रतिशत वार्षिक व्याज महिने क्रूण (क) के अधीन देय रकम के सदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेगा।

(3) अन्तरिती बैंक अग्रिमों, किए या सितिकांटा किए गए भुगतान इुण्डियों, बही क्रूणों और विविध क्रूणों और अन्य आमितियों की बाबत जो “ऐसे अग्रिमों के रूप में जो आमानी से बमूली योग्य नहीं है और या बमूली के लिए इवंत या शंकास्पद” है, के रूप में वर्गीकृत किया गया है, या जो ऊपर पैरा 4 के आधार पर विहित तारीख के पश्चात् पूर्णत या भागतः बमूली योग्य है या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सदाय की मांग और उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और कि किसी क्रूण या आमित की रकम 50,000 रुपए से अधिक है, तो अन्तरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना,

(क) क्रूणी या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहराव नहीं करना या किसी ऐसे क्रूण या आमित को बहु-खाते नहीं डालेगा।

(ख) उसे अन्तरित किन्हीं प्रतिभूतियों का या उसके द्वारा ली गई किसी आस्ति का विश्वय या अन्यथा अयन नहीं करेगा।

(3) इसके अतिरिक्त, अन्तरिती बैंक, बैंककारी विनियमन अधिनियम 1949 की धारा 45ज के साथ और कानूनी अधिनियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंक-कानूनी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45ठ के अधीन अतरिती बैंक के किसी संप्रबंदक, निदेशक, प्रबधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिर्णीत की गई रकम यदि कोई हो, की मांग करने और उनका सदाय करवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहियां करेगा,

(4) अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (i), (ii), और (iii) में उल्लिखित मदों के कारण अपने द्वारा की गई बसूलियों में से किसी समाश्रित दायित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से किसी ऐसे दायित्व, जो है वह समाश्रित हो या अत्याकृत, की बाबत, जिसे उपर्युक्त पंग (4) के निबंधनों के अनुसार निर्धारित नहीं किया गया था और जो विहित तारीख को या उसके पश्चात् उद्भूत हुआ है या जिसका पता चला है, संदाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पंग (5) (क) के अधीन उसके लिए किया गया उपवध अपर्याप्त हो, उपबंध कर सकेगा;

(5) अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (i), (ii) और (iii) में उल्लिखित मदों के कारण अपने द्वारा की गई बसूलियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे अन्य व्ययों की, जो उचित समझा जाए, उसमें से कठोरी करने और उपर्युक्त खंड (4) के निबंधनों के अनुसार उसमें से रकम विनियोजित करने के पश्चात् या ऐसे अनिषेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायित्वों की सीमा अंतिम रूप से अभिनियन्ति की जाने के पश्चात् इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए, यथा मंगणित समाश्रित दायित्वों की बाबत उपबंध में से उपलब्ध हो,

(क) निषेष बीमा और प्रत्यय गारण्टी निगम अधिनियम, 1961 की धारा 18 की उपधारा (2) के अधीन अन्तरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वारा उपबंधित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और

(ख) ऐसे निषेषकर्त्ताओं के मामले में, जिनकी बाबत अन्तरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गई है, संग्रहण खाते की बाबत शोध्य रकमों का, और ऐसे निषेषकर्त्ताओं के मामले में, जिनकी बाबत अन्तरिती बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गई है या निगम द्वारा किए गए या उपबंधित संदाय की बाबत निगम को उक्त खाते से शोध्य रकमों को उपर्युक्त उपबंध (क) के उपबंधों के अनुसार पहले सदृश किए जाने के पश्चात् उनके संग्रहण खाते में उन्हें शोध्य अनिषेष, यदि कोई हो, का संदाय करेगा;

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रकम, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो, अन्तरिती बैंक की वाहियों में उपबंधित की जाएगी तथा निषेष बीमा और प्रत्यय गारण्टी निगम माध्यारण विनियम, 1961 के विनियम 22 के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट रौति से निगम को संदर्भ की जाएगी।

परन्तु यह और कि अन्तरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (ख) में विनिर्दिष्ट संदाय उग दगा में करेगा,

(i) यदि पंग (5) के खंड (ख) में उल्लिखित तस्मान या समरूप खाते को बद नहीं किया गया है या

वह उम खाते में प्रत्यय द्वारा भुगतान के लिए परिषक्षण नहीं हुआ है, और

(ii) यदि उक्त खाते को बद कर दिया गया है या वह नकद भुगतान के लिए परिषक्षण हो गया है;

(6) उपर्युक्त खंड (5) के उपखंड (क) के निवंधनों के अनुसार निगम को शोध्य रकमों और उस खंड के उपखंड (ख) के निवंधनों के अनुसार निषेषकर्त्ताओं के संग्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी आपस में समान होगी, और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान अनुपात में कमी होगी;

(7) इस पंग के खंड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपर्युक्त किए जाने के पश्चात् अन्तरिती बैंक खंड (5) में निर्दिष्ट रकमों के 'उम अनिषेष जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, अन्तरक बैंक के भूतपूर्व शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेतु ऐसी, रीति से और उम सीमा तक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, आनुपातिक संदाय करेगा :

(क) प्रथमतः, सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व अधिभान शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो;

(ख) द्वितीयतः, सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, और उसके पश्चात्,

(ग) तृतीयतः, सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने तक अन्तरक बैंक के भूतपूर्व आस्थिगित शेयरधारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो;

(घ) उपर्युक्त उपखंड (क), (ख) और (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णतः सदृश करने पश्चात् अन्तरिती बैंक के पास बाकी बचे अधिषेष का अन्तरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य शेयरधारकों के बीच आनुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उपखंड में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं तो उसमें भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उम पर विनिश्चय अंतिम होगा।

(8) इस पंग में निर्दिष्ट संग्रहण खाते में शोध्य रकम के वारे में केवल अन्तरिती बैंक का दायित्व उस सीमा तक गमज्ञ जाएगा जो इस स्कीम में उपबंधित है;

(9) विहित तारीख या ऐसी पूर्वतर अवधि में, जो रोन्ड्रीय मरकार, भारतीय रिजर्व बैंक में परामर्श करने के पश्चात्, इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, बारह वर्ष के अवधारण पर, इस पंग के खंड (ii) में निर्दिष्ट किसी ऐसी मद का, जो उम तारीख तक बसूल नहीं की जा सकी हो,

मूल्यांकन अन्तर्गती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के पारा-मर्श में किया जाएगा और अन्तर्गती बैंक, उस मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम, इस पैरा के खंड (iv) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की, जो उपर्युक्त खंड (v), (vi) और (vii) में उपर्युक्त रकम और रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गई हो, पहले उसमें से कटौती करके वितरित करेगा।

(x) अन्तर्गती बैंक, पूर्ववर्ती खंड (i) (ii) और (iii) में उल्लिखित मर्दों के कारण बसूल किया गया ऐसे धन को, जिनकी तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा आक्षय किया जाने को मनावना नहीं है, अपने पास या किस अन्य बैंक या बैंकों के पास ध्याज वाले निक्षेपों में, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों और पर्याप्तियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निर्देश दे, विनिहित करेगा। प्रोटोकॉल ध्याज की खंड (iv), (v), (vi) और (vii) में निर्दिष्ट दायित्वों की पूर्ति के लिए उनमें उपर्युक्त रीति में उपयोगित किया जाएगा।

(7) किसी अभियक्त या विवक्षित संविदा में किसी प्रतिकूल वाले के होने हुए भी, पैरा (5) के निर्वंधनों के अनुसार अन्तर्गती बैंक के पास खोले गए नए खाते की बावत ध्याज का संदाय किया जाएगा और उस केवल उस या अगले उत्तरवर्ती पैराओं के उपर्युक्तों के अनुसार ऐसी तर्जों पर, जो अन्तर्गती बैंक अनुच्छान करे, जमा किया जाएगा।

(8) कोई भी निक्षेपकर्ता या अन्तरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अन्तरक बैंक के किसी दायित्व की बावत अन्तरक बैंक या अन्तर्गती बैंक से, इस स्कीम द्वारा वित्ती सीमा के सिवाय, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।

(9) केन्द्रीय भरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तर्गती या अन्तरक बैंक के ब्रिनाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाहियां नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुसरण में सदमावपूर्वक की गई है या की जाने के लिए आवश्यित है।

(10) उत्तरवर्ती पैरा में निर्दिष्ट अनुसूची में विनिर्दिष्ट कर्मचारियों से निन्न अन्तरक बैंक के मर्दी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और यह समझा जाएगा कि उन्हे अन्तर्गती बैंक द्वारा उसी परिस्थिति और सेवा के उन्हीं निर्वंधनों और शर्तों पर नियुक्त किया गया है जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबाहर बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थी।

परन्तु यह कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारी, जिन्होंने अन्तरक बैंक या अन्तर्गती बैंक को, उस तारीख के, जिसको यह स्कीम केन्द्रीय भरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक आगामी एक भास के आवसान के पूर्व किसी भी ममत्य अन्तर्गती बैंक के कर्मचारी न होने के अपने आगम के बारे में लिखित सूचना द्वारा सूचित किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 के उपवर्धों के अधीन ऐसे प्रतिकर, यदि

कोई हो और ऐसे पैरान, उपदान, भविष्य निधि और सेवा-निवृत्ति फायदे के मंदाय के लिए हकदार होंगे, जो 27 अप्रैल 1985 को कारबाहर के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हो।

परन्तु यह और कि अन्तरक बैंक के ऐसे कर्मचारियों की बाबत, जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हे अन्तर्गती बैंक के कर्मचारियों के स्वप्न में नियुक्त किया गया है अन्तर्गती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अन्तर्गती बैंक की सेवा में इसके दोषम उनकी छटनी की दशा में उन आधार पर छटनी प्रतिकर के मंदाय का दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर बनी रही है और अन्तर्गती बैंक में उनके स्थानात्परण में विरामन नहीं हुई है।

(11) इस स्कीम में उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट व्यक्ति, विज्ञत तारीख की अन्तरक बैंक के कर्मचारी हो रह जाएंगे और तत्त्वमय प्रवृत्त किसी विधि या किसी कागज या संविदा में किसी बात के होने हुए भी, इस प्रकार विनिर्दिष्ट व्यक्ति, केवल ऐसे पैरान, उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवा-निवृत्ति फायदे के हकदार होंगे, जो 27 अप्रैल, 1985 को कारबाहर के बंद होने के ठीक पहले अन्तरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के अधीन उन्हे सामान्य तौर पर अनुज्ञेय हों।

परन्तु यह कि नियोजन की हालि के लिए प्रतिकर, यदि कोई हो, उहा तक उसका संबंध सेवा की किसी संविदा के अनिवार्यत भाग से है केवल वही होगा जो रिजर्व बैंक द्वारा अवधारित किया जाए (इस बाबत जिसका अवधारण अंतिम और आवधकर होगा) :

परन्तु यह और कि इसमें को किसी बात से यह नहीं समझा जाएगा कि वह अन्तर्गती बैंक को किसी ऐसे व्यक्ति के, जिसका नाम इस स्कीम में उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट किया गया है, ऐसी हैमियत में और ऐसे निर्वंधनों और शर्तों पर, जो अन्तर्गती बैंक उचित समझे, पुनर्नियोजन करने से निवारित करती है।

(12) अन्तर्गती बैंक, उस तारीख से, जिसको इस स्कीम को मंजूर किया जाता है, तोन वर्ष में अनधिक अवधि के अवसान पर, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों को वही परिवर्त्यमित और सेवा के वही निर्वंधन और शर्तें संदाय या मंजूर करेगा, जो अन्तर्गती बैंक के तत्समान रैक या प्रास्थिति के कर्मचारियों को, अन्तर्गती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतुल्य अन्तरक बैंक के उक्त कर्मचारियों के पास अहेताएं और अनुभव के समान या समतुल्य है।

परन्तु यह कि यदि कोई शांका या सतमेद उत्पन्न होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किसी की अहेताएं या अनुभव अन्तर्गती बैंक के तत्समान रैक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों की अहेताएं और अनुभव के समान या समतुल्य है

या नहीं या वह अन्तरिती बैंक के बैंकमान में कर्मचारियों का बैंक नियत करने के लिए अपनाएं जाने वाले सिद्धांतों की प्रतिक्रिया के संबंध में है, तो शंका या मतभेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनियोग अंतिम होगा।

(13) यथास्थिति, अन्तरक बैंक या अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भवित्व परिधि के न्यासी या प्रशासक, विहित तारीख को या उसके पश्चात् यथा संभव योग्य, अन्तरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी भवित्व परिधि के न्यासी को,

या अन्यथा, जैसा अन्तरिती बैंक निर्देश दे, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के फ़ायदे के लिए न्यास में शारित मत्र धन और विनिधान अन्तरित बन देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चात्वर्ती न्यासी विनिधानों के मूल्य में किसी कमी के लिए, या विहित तारीख के पहले किए गए किसी कार्य उपेक्षा, या व्यावरण की बावजूद दायरा नहीं होंगे।

(14) अन्तरिती बैंक, ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक को भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वयन करने के संबंध में समझ-समय पर अपेक्षा करे।

(15) अन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे प्रारूप में और ऐसे कानूनिक अंदरालों पर, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करे, अन्तरक बैंक के शेयरधारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोका जाएगा जब रिजर्व बैंक ऐसा निर्देश दे।

(16) किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे जिसकी अन्तरिती बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस दशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक्लृप्त में दिया गया है, यदि अन्तरक बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकूल पते पर, जब तक कि कोई नया पता अन्तरिती बैंक की पुस्तकों में रजिस्ट्रीकूल न हो, प्रेपिती को समोधित किया गया है, और उसे पूर्व-संदर्भ सामान्य ढाक में भेज दिया गया है, और ऐसी सूचना उसे ढाक में डाले जाने के पश्चात् अक्तालीम घंटे के अवमान पर तामील की गई समझी जाएगी। इसके अतिरिक्त, किसी ऐसी सूचना या संसूचना को, जो सार्वजनिक हित की हो, एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में, जिनका परिचलन ऐसे स्थानों पर हो जहां बैंक अपने कारबाह का संबंधवहार कर रहा था, विज्ञापित किया जाएगा।

(17) यदि इस स्कीम के किसी उपबंध का निर्वचन करने समय कोई शंका उत्पन्न होती है तो मामले को भारतीय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा और उसकी गय निष्पायक होगी और अन्तरिती बैंक और अन्तरक बैंक, दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभी सदस्यों, नियोपकरणीयों और अन्य लेनदारों तथा कर्मचारियों पर भी और किसी ऐसे अन्य व्यक्ति

पर, जिसका इन बैंकों में किसी के संबंध में कोई अधिकार या वायित्व है, आवश्यक होगी।

(18) यदि इस स्कीम के उपबन्धों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, अन्तरक और अन्तरिती बैंकों को या उनमें से किसी को ऐसे निर्देश, जो इस स्कीम से असंतान नहीं, जारी कर सकेगी, जो केन्द्रीय सरकार को, भारतीय रिजर्व बैंक में परामर्श करने के पश्चात् कठिनाई इर करने के प्रयोगन के लिए आवश्यक या उपयुक्त प्रतीन हो।

[फा. म. नं. पर/1/85-वी. आ. III]

गणद केनकर, अपर मर्चिव

अनुसूची

बैंककारी कांपनी अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उधारा (7) के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंत्रज र की गई मिश्न स्टेट बैंक नियोगी के समामेलन के लिए स्कीम में सलग और उसका उपर अनुसूची

कर्मचारी का नाम

अन्तरक बैंक में पदनाम

1. श्री वी. कुण्डन

महायक महाप्रबंधक

S.O. 558(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an Order of moratorium in respect of the Miraj State Bank Ltd., Miraj under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Miraj State Bank Ltd., Miraj with the Union Bank of India.

And whereas the Reserve Bank after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme has modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned :

(1) The Miraj State Bank Ltd., Miraj shall be the transferor bank and the Union Bank of India shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers and claims,

demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums or money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant, apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks, bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other, if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(9) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the

first instance as at the close of business on the 27th April 1985 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by the chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

(4) I. The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely :—

- (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
- (b) (i) Government securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
- (ii) The securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

- (c) Where the market value of any security, share debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted, book debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery."

II. Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

III. Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

* The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely :—

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interests, if any, accrued hereon up to the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit up to the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 27th April 1985 issued to the transferor bank :

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 27th April 1985 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment :

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such accounts.

EXPLANATION

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business

on the 27th April 1985 (together with interest payable up to the date immediately preceding the prescribed date) and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution.'

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days, from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of section 18 of that Act:

Provided that—

- (a) if any account referred to in clause (b) has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payments to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (b) in case the person entitled to any amount referred to in clause (b) cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (c) On the prescribed date, the entire amount of the paid up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below.

(6) In respect of

- (a) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (b) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below

shall be treated as a collection account and may be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

(i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary every person who was as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;

(b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) together with interest at six per cent per annum for the period of the default.

(ii) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India :

(a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.

(b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

(iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promotor, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956;

(iv) the transferee bank may out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date.

(v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained,

- (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guaranteed Corporation Act, 1961 and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
- (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for by the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above :

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961 :

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;

(vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions ;

(vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders, of the transferor bank in the manner and to the extent specified below :

(a) in the first place, the amounts, if any due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

(b) in the second place, the amounts, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter

(c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;

(d) after all the amounts mentioned in sub-clauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank .

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(viii) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;

(ix) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.

(x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.

(7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs only at such rates as the transferee bank may allow.

(8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against

the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

(9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.

(10) All the employees of the transferor bank other than those specified in the schedule referred to in the succeeding paragraph shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 27th April 1985.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1985.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for the payment of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The persons specified in the schedule annexed to this scheme shall on the prescribed date cease to be the employee of the transferor bank and notwithstanding anything contained in any law for the time being in force or any agreement or contract, the persons so specified shall be entitled to and only to such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible to them under the rules or authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 27th April 1985.

Provided that the compensation, if any, for the loss of employment, so far as it relates to the unexpired portion of any contract of service, shall be such and only such as may be determined by the Reserve Bank (whose determination in this respect shall be final and binding).

Provided further that nothing herein shall be deemed to prevent the transferee bank from re-employing any person whose name has been specified in the schedule annexed to this scheme in such capacity and on such terms and conditions as the transferee bank may deem fit.

(12) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience on the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(13) The trustees or administrators of any provident fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund constituted for the transferee bank or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(14) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

(15) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

(16) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty-eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

(17) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and

transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.

(18) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India, to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[F. No. TS/1/85-B.O.III]
S. M. KELKAR, Addl. Secy.

SCHEDULE

Schedule attached to and forming part of the scheme for the amalgamation of the Miraj State Bank Ltd., as sanctioned by the Central Government under sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949).

| Name of the employee | Designation in the transferor bank |
|----------------------|------------------------------------|
|----------------------|------------------------------------|

1. Shri V. Krishnan
Assistant General
Manager